International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य में प्रेमपूर्ण सौन्दर्य"

डॉ. हरिशंकर प्रजापति
राजकीय शास्त्रीसंस्कृत महाविद्यालय,
तलाव गांव, दौसा

सृष्टि अनन्त सौन्दर्य से परिपूर्ण हैं, साहित्य मनीषियों ने सौन्दर्य को प्रकृति सौन्दर्य, मानव सौन्दर्य ,दिव्य सौन्दर्य वकला सौन्दर्य इन चार भागों में विभक्त कियाहैं।काव्य में सौन्दर्य प्रकृति निरूपण ,आलम्बन,उद्दीपन, मानवीकरण,अलंकार विधान, प्रतीक विधान, रहस्यानुभूति, उपदेश ग्रहण , वातावरण पृष्ठभूमि के रूप में आता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'चिन्तामणि' में सौन्दर्य पर विचार व्यक्त करते हुए कहा है , कि – "सौंदर्य बाहर कीवस्तु नहीं है,सौन्दर्य मन के भीतरकी वस्तु है" ।[i]

सौन्दर्य युवावस्था को अत्यधिक प्रभावित करता है , इसी अवस्था को ध्यान में रखते हुए पं. सद्गुरूशरणअवस्थी ने लिखा है - "सौन्दर्य की उत्पत्ति और उसके विकास का कारण यौन व्यापार है" ।[ii]

अंग्रेजी भाषा में सौन्दर्यका पर्याय 'ब्युटी'शब्द है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार 'ब्युटी'मानवीय मुखरूप याअन्य वस्तुओं मे अनुपात , आकृति व रंग इत्यादिगुणों केविकास का संयोग है, जो नेत्रों को आनंद देता हैं" ।[iii]

अमरीकन विद्वान जार्ज सतायना ने अपनी कृति 'सेन्स ऑफ ब्यूटी 'में कलात्मक सौन्दर्य की भावपरक व्याख्याकरते हुए लिखा है – " सौन्दर्य एक भावात्मक त त्व है , जिसका स्वरूप प्रसन्नतादायक है" ।[iv]

कवि सुमित्रानन्दनपंत ने सौन्दर्य के भाव को स्वीकारा हैं ,उनके अनुसार "सौन्दर्य से प्रणय शक्तिका विकास होता है और सुन्दरता की प्रथम अनुभूति नयन हैं"।[v]

पंत जी ने 'पल्लव' में लिखा है- "वही प्रजा का सत्यस्वरूप..... ...भावना मय संसार" ।[vi]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय कवि शास्त्र की परम्परा में "कवि श्री सुमित्रानन्दन पंत " ने लिखा हैं - भाषा अथवा मुख्यत: कविता की भाषा का प्राण राग हैं और राग का अर्थ हैं - आकर्षण ! यह विद्युत्स्पर्श आकर्षण है, जिसके द्वारा हम खींचकर शब्दों की आत्मा तक पहुंच जाते हैं।

डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त ने अपने 'साहित्य आकर्षण शक्ति' नामक पुस्तक में साहित्य की आकर्षण शक्ति का संबंध मानसिक स्तर से बता या हैं। इसके मानसिक स्तर पर तीन उपस्तर होते हैं - प्रथम ऐन्द्रिक आकर्षण , द्वितीय बौद्धिक आकर्षण , तृतीय भावात्मक आकर्षण ।[vii]

"प्रसाद"ने 'कामायनी'के 'काम सर्ग' में सौन्दर्य के रूप का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहा हैं -

"हम दोनों का अस्तित्व रहा आरम्भिक आवर्तन सा,

जिससे संसृति का बनता हैं आकर रूप के नर्तन सा" ।[viii]

कवि "शिवमंगल सिंह सुमन" ने 'पनिहारिन'कविता में नायिका के बाह्य सौन्दर्य को इंगित किया हैं -

मदभरी छलकती आंखों मेंछिप सका कभी यौवन चंचल?

इतना सम्हाले पर भी तोगिर गिर जाता था अंचल ।

आन्तरिक सौन्दर्य, वस्तु या व्यक्ति के स्वरूप का नहीं जड़ चेतन रूपी इस संसार को भी रमणीय रूप प्रदान करता हैं।आन्तरिक रूप सौन्दर्य प्राप्ति से हृदय का रिक्त - स्थान भर जाता हैं। इसी भाव को सुमन जी ने अपने शब्दों में लिखा हैं -

शून्य नयनों में लगा था वेदना का मूक मेला,

एक हीं मुस्कान से जब भर दिया तुमने हृदय का रिक्त कोना,

याद तो होगा तुम्हे वो दिन सलोना ।

वस्तुत: सौन्दर्यानुभूति में व्यैक्तिक चेतना का प्राधान्य होता हैं,दूसरा पुरुष प्राधान्य दृष्टि का ,तीसरा चेतना शक्ति का व चौथा स्पर्श का महत्वपूर्ण स्थान होता हैं।
सौंदर्यानुभूति संसार का आदि भाव हैं , जिसने जड़ व चेतन दोनो को प्रभावित किया हैं। सौंदर्यानुभुति के मूल रूप में तत्त्व छिपा हैं, जो मानस पटल पर सिधी छाप छोड़ता हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

काव्य में सौन्दर्यानुभूति–

हृदय की अनुभूति से शब्द पाकर स्वरूप में भाव बाहर फूटपड़ता है ,तब कविता या काव्य की उत्पत्ति होती हैं।

हृदय अनुभूत तथ्यों व प्रतीकों के माध्यम से काव्य के सौंदर्य को व्यक्त करता हैं। पीड़ित हृदय और प्रफुल्लित हृदय को कब क्या अच्छा लग जाता हैं पता हीं नहीं चलता हैं ।इसी बात को ध्यान में रखते हुए "महाकवि बिहारी" ने कहा था-

"समय समय सुन्दर सबै,रूप कुरूप न कोय।

मन की जितजेती रुचि,तित तेती रुचि होय" ।।[ix]

अर्थात् समय के अनुसार रूप व कुरूप भी बदल ही जाता हैं। मन की रुचि के अनुरूप ही वस्तु प्रिय या अप्रिय अनुभूत होती है। वस्तुत: सौ न्दर्यानुभूति को समाज के प्रत्यक्ष रखने का साधन कविता या काव्य हैं।

सौन्दर्य आलम्बन का धर्म है और प्रेम आश्रय की भावना। दोनों अपनी सार्थकता के लिए एक दूसरे पर आश्रित हैं। आश्रय के हृदय में प्रेम की भावना आलम्बन के रूप सौंदर्य से हीं स्फुट होती हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा हैं–

प्रेम की प्राप्ति से दृष्टि आनन्दमय और निर्मल् हो जाती हैं। चारों ओर सौंदर्य का विकास दिखाई देने लगता हैं।प्रेम सौंदर्य से हीं रस ग्रहण कर सौंदर्य में हीं पर्यवसित होता हैं। प्रेम व सौंदर्य संगम से हीं जीवन में अनेक नई राहों का जन्म होता हैं।

डॉ. रामकुमार खण्डेलवाल के अनुसार –

"फूल सुन्दर है, किन्तु ममता की मुस्कान से अधिक ना हो,

इन्द्रधनुष अभिराम हैं, किन्तु प्रणय के सतरंगी स्वप्नों से अधिक ना हो,

पूनम का उजाला शुभ्र शशिदिव्य कि अलौकिक हैं,

किन्तु श्रद्धा और पवन विश्वास के आलोक से अधिक नहीं ।

एक प्रेमपूर्ण हृदय सर्वाधिक सुन्दर हैं, इससे सुन्दर कुछ नहीं"।[x]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अतः प्रेम सुन्दर हैं,प्रेम स्वयं सौंदर्य हैं।

'आचार्य रामच न्द्र शुक्ल जी ' ने लिखा हैं , कि अभिव्यञ्जना की प्रगल्भता और विचित्रता के भीतर प्रेम वेदना की दिव्य विभूति का विश्व के मंगलमय सुख और दुःख दोनों को अपनाने की अपार शक्ति का छाया में सौंदर्य और मंगल संगम का आभास होता हैं।

'डॉ. सुमन' की कविताओं में प्रेम सौंदर्य का सहज प्रस्फुटन हुआ है-

"सुंदरि! मुझको बंदी न करो अपने कुंचित कच जालो में"।

'कवि सुमन जी' ने इसमे अपने प्रेम की सुंदरता में वर्णन किया हैं वे अपनी प्रेमिका के सौंदर्य पर मोहित हो जाते हैं,क्योंकि उसके काले व लम्बे बाल नारी की सुंदरता में चार चांद लगा रहे हैं।

'डॉ.सुमन' ने अपने काव्य संग्रह 'प्रलय सृजन'की कविता "गुनिया का यौवन " में गुनिया के अनुपम सौंदर्य पर मुग्ध होते हुए लिखा हैं -

गृह पथ वृंदावन बनता जब

कानों तक तनते नयन बाण

विरला ही होगा भाग्यहीन

मनविद्ध जिसके प्राण।

अर्थात् - गुनिया के आँखों रूपी सौंदर्य को देखकर जिसका मन उसके नयन बाण से घायल न हुआ हो और हृदय पुलकित न हुआ और वह मनुष्य इस भावमय संसार में विरल भाग्यहीन के समान हैं।

सौंदर्य काव्य का अनुपम तत्त्व हैं,सौंदर्य की सर्वव्यापकता अपरिहार्य हैं। कवि सुमन के प्रथम काव्य संग्रह 'हिल्लोल'में तो सौंदर्य चारों ओर हिलोरें मारता हैं। उन्होंने सौंदर्य को निजी अनुभूति के साथ रखकर इस भावमय संसार को परोस दिया हैं।सौंदर्य का स्वरूप कभी-कभी व्यक्ति/वस्तु का अत्यधिक साहचर्य या सामिप्य पाकर सौन्दर्य भावना को क्षीण बना देता हैं।

सौंदर्य का प्रथम गुण आकर्षण हैं।आकर्षण शक्ति के बिना सौंदर्य की कोई अनुभूति नहीं होती हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'डॉ. सुमन' ने अपने काव्य संग्रह 'प्रलय सृजन'की कविता तथा "गुनिया का यौवन" में सौंदर्य की मस्ती को इस प्रकार उकेरा हैं-

चुनरी लाल,नीला लहंगा,

बिखरे कुंतल, सहमे उरोज,

किस चपल कन्हैया को उनकी,

कजरारी आँखें रही खोज।

कवि का मन सौंदर्य के वशीभूत यौवन की मादकता में खो जाता हैं।अतः यह कहना उचित होगा कि सौंदर्य विश्वास प्रेम का घनिष्ठ संबंध हैं ,इसी संबंध को सुमन जी ने भी स्वीकारा हैं।सौंदर्य की जमी पर ही कमल खिला करते हैं , तब प्रेम की भूमिका स्वतः ही निर्मित हो जाती हैं ।

सुंदरी कला जगत का बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, सौंदर्य की सर्व व्यापकता अपरिहार्य है ।सौंदर्य कलाकार को अलग-अलग रूप में प्रभावित करता है , सौंदर्य पर रचनाकार की निजता प्रभावी होती है , क्योंकि उसकी कल्पनाओं में ढल कर ही सौंदर्य समाज के सामने आ पाता है ।सौंदर्य के श्रेष्ठा हो या ग्राहक उसके भावना व्यापार में व्यक्तिक मनोवैज्ञानिक पहलू का महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कवि डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन के पहले काव्य संग्रह 'हिल्लोल' में सौंदर्य चारों तरफ हिलोर मारता दिखाई पड़ता है , उन्होंने सौंदर्य को निजानुभूति के साथ रखकर इस संसार को भेंट किया है ।सौंदर्य के निर्धारण के अनेक तथ्य होते हैं, प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग मापदंड होता है , सजीव के अतिरिक्त जड़ -प्राण पदार्थों का सौंदर्य भी घटता बढ़ता रहता है ।शिक्षा , संस्कार, समाज की परंपरा यें आदि भी सौंदर्य संबंधी हमारी धारणाओं को स्थिर करने में सहायक होते हैं , सौंदर्य कभी-कभी व्यक्ति या वस्तु का अधिक समिति पाकर शिव निर्जीव हो जाता है ।

सौंदर्य स्वरूप के दो पहलू होते हैं - प्रथम बाह्य सौंदर्य, द्वितीय आंतरिक सौंदर्य।

सौंदर्य को देखकर आकर्षण शक्ति का विकास होता है , इस आकर्षण से जिस भाव की अनुभूति होती है , वह सौंदर्यानुभूति कहलाती है। जो मूलतः आन न्दात्मक सा मञ्जस्य पूर्ण स्थूल परियोजना अतीत निर्लिप्त और अलौकिक है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जहां प्रेम है वहां सौन्दर्य रहता है , जहां सौन्दर्य है व हां प्रेम है ,परन्तु कभी-कभी इसके विपरीत भी देखने को आता है ।

आधुनिक हिंदी साहित्य में छायावादी काव्यधारा ने प्रकृति से तादा त्मय स्थापित कर लिया है ।छायावाद के कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है , जिससे निर्जीव में सजीवता दिखाई देने लगती है , कभी मन प्रकृति में अपनी प्रेमिका के दर्शन करता है कभी अपनें प्रियेसे सुख-दु:ख की बातें करता है ।प्रेम का उ दात्त स्वरुप दिखाई देता है ।प्रकृति का सौंदर्य सुमन को प्रेम के लिए बाध्य करता है।सुमन जी ने अपने काव्य संग्रह विन्ध्य-हिमालय की कविता 'शरद पूर्णिमा' में बरसात रूपी नायिका से कह उठता है–

"बीती बेसुध बरसात

शरद शरमाती सीआई"

सुमन जी ने अपने काव्य संग्रह विन्ध्य-हिमालय में प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों का समावेश किया है, वर्षा ऋतु के काले काले बादलों का मनोहरी रूप इनके काव्य में दिखाई पड़ता है जिससे विरही मन व्याकुल हो उठता हैं ।

कवि सुमन ने अध्यात्म को आत्मा का उन्नयन स्वीकार किया है। सुमन जी ईश्वर की सत्ता को ललकार ते नहीं क्योंकि ईश्वर आस्था से जुड़ा हुआ है। वे मनुष्य को मनुष्य की हिंसा एवं दासता से मुक्ति को सबसे बड़ी पूजा स्वीकार करते हैं ।उन्होंने 'महाप्रयाण' कविता ने लिखा है -

"काली दह के कालिया नाग को हम नाथेंगे, कुचलेंगे

जहरीले दांत उखाड़ सिन्धु की लहरों में लय कर देंगे

हम अनाचार हिंसा बर्बरता से कर देंगे मुक्त मही"

शिवमंगल सिंह सुमन ने कर्म को मह त्व दिया उनके अनुसार कर्म सौंदर्य से ही अध्यात्म सौंदर्य जन्म लेता है ।हम क र्म में रत रहकर संयम -त्याग-हिंसा-सहनशीलता जैसे गुणों को विकसित कर सकेंगे ।मनुष्य को याद रखना चाहिए कि जो प्राणी जन्म लेता है , वह मरता है ।सुख और दुख आते जाते रहते हैं, जो जलता है वह बुझता है जो फरता है वह झरता है।

कवि के काव्य प्रेम-सौंदर्य की भावना से भी युक्त हैं और उसमें अनुभूतियों का अंकन किया गया हैं। एक ओर तो सुमन जी के काव्य में प्रेम और सौंदर्य के छायावादी संदर्भ देखने को मिलते हैं वही दूसरी ओर इन संदर्भो का प्रगतिशील रूप भी देखने को मिलता हैं। प्रेम-विश्वास-सौंदर्य के क्षेत्र में कल्पना की रंगीनियों के साथ जो उडान भरी और काव्य

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को मधुर बनाया,उसका प्रभाव सुमन जी की कविताओं में परिलक्षित होता हैं , जिसमें प्रेम का छिछला रूप वर्णित नहीं हैं ,यदि है तो प्रेम का उदार स्वरूप ओर सौंदर्य का उज्जवल रूप ।

---

[i]डॉ. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि – भाग – 1, पृ. 22

[ii]पं. सद्गुरूशरणअवस्थी, बुद्धि तरंग – पृ. 23

[iii]ए.सी. ब्रेडले, ऑक्स्फ़र्ड लेक्चरर्स ऑन पोयट्री, पृ. 40

[iv]जार्ज सतायना, सेन्स ऑफ ब्यूटी, पृ. 37

[v]सुमित्रानन्दनपंत, पल्लव

[vi]वही – 87

[vii]डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त ने अपने 'साहित्य आकर्षण शक्ति', पृ. 100

[viii]"प्रसाद"ने 'कामायनी'के 'काम सर्ग', पृ. 21

[ix]बिहारी रत्नाकर, पृ. 432

[x]डॉ. रामकुमार खण्डेलवाल, हिन्दी काव्यों में प्रेम भावना, पृ. 25